

DIFFERENT STAGES
OF EMOTIONAL
DEVELOPMENT

शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास (Emotional Development during Infancy)

1. अपने जन्म के समय से ही अपनी चीख पुकार और हाथ पैर चलाने के द्वारा बच्चा अपने अन्दर संवेगों की उपस्थिति का आभास देता है। परन्तु इस अवस्था में उसमें कौन-कौन से संवेग विद्यमान रहते हैं, इस बात के कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिलते।
2. वास्तव में अगर देखा जाए तो जैसा कि श्रीमती हरलाक (Hurlock) लिखती हैं—“जन्म के समय और उससे कुछ देर बाद संवेगात्मक व्यवहार के प्रथम दर्शन शक्तिशाली उद्दीपकों के प्रति सामान्य उत्तेजना के रूप में होते हैं। इस समय शिशु में कोई ऐसे स्पष्ट निश्चित संवेगात्मक पैटर्न (Emotional Patterns) का पता नहीं चलता जिन्हें विशेष संवेगात्मक अवस्थाओं के रूप में पहचाना और जाना जा सकता हो।” (1959, p. 216)
इस तरह से प्रारम्भिक अवस्था में बच्चा किसी भी उद्दीपक के प्रति बिना उसको जाने पहचाने सामान्य उत्तेजना के रूप में अपनी संवेगात्मक अभिव्यक्ति करता है।
3. सामान्य उत्तेजना व्यक्त करने की यह अन्धावस्था कुछ समय पश्चात् समाप्त हो जाती है। अब शिशु की सामान्य उत्तेजना के द्वारा उसके हर्ष और विषाद का अनुमान लगाया जा सकता है। अचानक होने वाली जोर की आवाज और शोरगुल, गीला बिछौना, अधिक ठंडी और गर्म चीजों का स्पर्श, भूख आदि उद्दीपकों के प्रति शिशु की प्रतिक्रिया विषादयुक्त होती है। दूसरी ओर प्यार से थपथपाना, गोदी में ले कर प्यार करना और माँ द्वारा स्तन पान कराना आदि उद्दीपकों के प्रति उसकी क्रिया आनन्दमय चेष्टाओं के रूप में प्रकट होती है।
4. स्पिटज (Spitz) के अनुसार सामान्य उत्तेजना की आनन्ददायक तथा विषादमय दो प्रकार की अलग-अलग अनुक्रियाओं (Responses) की अभिव्यक्ति निम्न प्रकार से होती है :
“पहले दो मास में शारीरिक उद्दीपकों द्वारा हर्ष और विषाद की उत्पत्ति होती है। तीसरे माह में बड़ों के हंसने और उनसे खेलने के परिणामस्वरूप वह मुस्कुराने का प्रयास करता है और इस तरह मनोवैज्ञानिक उद्दीपन के फलस्वरूप उसमें आनन्दमयी अनुक्रिया (Pleasant Response) होती है। कुछ समय बाद यह देखा जाता है कि अगर शिशु को अकेला छोड़ दिया जाए तो वह बहुत दुःखी हो कर रोने लग जाता है और इस तरह से मनोवैज्ञानिक उद्दीपकों के माध्यम से उसमें विषाद की उत्पत्ति होने लगती है।” (Hurlock, E.B. 1959, p. 217)

5. जैसा कि ऊपर कहा गया है, छः मास की अवस्था तक संवेगात्मक व्यवहार आनन्द और विषादयुक्त अनुक्रियाओं तथा चेष्टाओं के माध्यम से व्यक्त होता है। इस तरह से शिशु में इस अवस्था तक हर्ष और विषाद नामक दो संवेगों का ही अस्तित्व पाया जाता है। जब शिशु छः माह का हो जाता है तब वह नकारात्मक संवेग ग्रहण करता है। फलस्वरूप आने वाले महीनों में भय, घृणा, ईर्ष्या आदि संवेग उसमें अपना घर बना लेते हैं। 10 और 12 माह के शिशु में प्रेम, सहानुभूति, आमोद, आत्म-गौरव आदि सकारात्मक संवेग उत्पन्न हो जाते हैं। 2 वर्ष तक शिशु में जैसा कि 1931 में ब्रिज (Bridge) द्वारा किए गए अध्ययन से पता चलता है, प्रायः सभी सकारात्मक और नकारात्मक संवेग अपना घर बना लेते हैं तथा उन्हें अच्छी तरह से पहचाना जा सकता है।
6. शैशवावस्था में संवेगों की अभिव्यक्ति में भी निरन्तर निखार आता रहता है। शुरु-शुरु में मुखमुद्रा और शारीरिक चेष्टाओं के माध्यम से यह पहचान नहीं की जा सकती कि शिशु किस संवेग को अभिव्यक्त कर रहा है। केवल माता ही अपने बच्चे के रोने और चिल्लाने का प्रयोजन समझ सकती है। बाद में धीरे-धीरे बच्चों द्वारा अभिव्यक्त संवेगों को बाह्य लक्षणों से पहचाना जा सकता है। इसके अतिरिक्त शैशवावस्था के प्रारम्भिक महीनों में संवेगात्मक रूप से उत्तेजित करने वाली परिस्थितियों में शिशु अपनी प्रतिक्रिया तेजी से व्यक्त करता है। लेकिन जैसे-जैसे वह बाल्यावस्था की ओर बढ़ता है उसका चीखना-चिल्लाना और हाथ पैर चलाना कम होता जाता है। धीरे-धीरे आयु के बढ़ने के साथ-साथ वह अपने संवेगों की अभिव्यक्ति गत्यात्मक क्रियाओं के माध्यम से न कर भाषा के द्वारा करने लगता है।

बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास (Emotional Development during Childhood)

जैसा कि ऊपर बताया गया है बाल्यावस्था के प्रारम्भ काल तक बच्चे में प्रायः सभी संवेगों का जन्म हो चुका होता है। अतः बाल्यावस्था में कोई नवीन संवेगों की उत्पत्ति न हो कर संवेग जागृत करने वाली परिस्थितियों और उद्दीपकों की प्रकृति और संवेगों को अभिव्यक्त करने के ढंग में परिवर्तन होते रहते हैं। इस दृष्टिकोण से बाल्यकाल में बच्चे में निम्न परिवर्तन दिखाई देते हैं :

1. शैशवावस्था में बच्चा बहुत स्वार्थी होता है। वह अपनी ही हित साधना में लीन रहता है। अतः इस अवस्था में बच्चे के संवेग प्रायः भूख, प्यास, नींद, माँ-बाप का स्नेह, खिलौनों की इच्छा आदि तत्काल आवश्यकताओं द्वारा ही संचालित होते हैं। लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ा होता चला जाता है उसकी दुनिया भी बड़ी होती जाती है और अब उसके संवेग अनेक प्रकार के उद्दीपकों और परिस्थितियों द्वारा जागृत होना प्रारम्भ कर देते हैं। बालक के संवेगात्मक व्यवहार को स्कूल या वातावरण, हमजोलियों के साथ उसका सम्बन्ध और अन्य वातावरण सम्बन्धी कारक प्रभावित करते हैं। उसकी रुचियों और अनुभवों का क्षेत्र भी विस्तृत हो जाता है और इन नवीन रुचियों और अनुभवों से उसके संवेगात्मक व्यवहार को एक नई दिशा मिलती है। एक ओर जहाँ उसके संवेग नवीन उद्दीपकों से जुड़ जाते हैं वहाँ दूसरी ओर कुछ पुराने उद्दीपकों द्वारा संवेगों को जागृत करने की क्षमता प्रायः समाप्त हो जाती है। अब वह कपड़े पहनना अथवा स्नान करने में, हाथ-पैर पटकने जैसी चेष्टाएँ नहीं करता और न अब उसे अपरिचितों से भय ही लगता है।
2. इस अवस्था में संवेगों की अभिव्यक्ति के ढंग में भी पर्याप्त परिवर्तन दिखाई देता है। शैशवावस्था में संवेगात्मक व्यवहार में आंधी और तूफान की सी गति होती है और यह प्रायः चीखने-चिल्लाने, हाथ-पटकने आदि गत्यात्मक क्रियाओं द्वारा व्यक्त होता है। लेकिन बाल्यावस्था और विशेष रूप से उसके आखिरी वर्षों में बालक अपने संवेगों की अभिव्यक्ति उचित माध्यम से करने का प्रयास करता है। संवेगात्मक रूप से अब उसमें कुछ स्थिरता एवं गम्भीरता आने लगती है। परिवर्तनों के मूल में कई कारण हैं, प्रथम तो

बाल्यावस्था में बालक को अपनी भावनाओं के प्रकाशन के लिए भाषा का माध्यम मिल जाता है, दूसरे अब वह अधिक सामाजिक हो जाता है और यह अनुभव करने लगता है कि अब उसे डरना या बातचीत में रोना अथवा गुस्सा होना शोभा नहीं देता। तीसरे, उसमें बुद्धि का पर्याप्त विकास हो जाने के कारण अब वह अपने संवेगात्मक उफान पर नियन्त्रण स्थापित करने में समर्थ बन जाता है।

इस प्रकार से बच्चा बाल्यकाल में पदार्पण करने के साथ संवेगात्मक स्थिरता और परिपक्वता की ओर बढ़ना प्रारम्भ करता है और बाल्यकाल की समाप्ति तक अपने इस ध्येय में बहुत कुछ सफलता प्राप्त कर लेता है।

किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास (Emotional Development during Adolescence)

किशोरावस्था में एक बार फिर संवेगात्मक सन्तुलन बिगड़ जाता है। इस समय संवेगों में आँधी और तूफान की सी गति और प्रचण्डता होती है। इसलिए किशोरावस्था को प्रायः तूफान और तनाव का समय माना जाता है। जीवन की किसी अन्य अवस्था में संवेगात्मक शक्ति का प्रवाह इतना भीषण नहीं होता जितना कि इस अवस्था में पाया जाता है। एक किशोर के लिए अपने संवेगों पर नियन्त्रण रखना बहुत कठिन होता है। यौनि-ग्रन्थियों के तेजी से क्रियान्वित होने और शारीरिक शक्ति में पर्याप्त वृद्धि हो जाने के कारण बाल्यावस्था में पाई जाने वाली संवेगात्मक स्थिरता और शान्ति भंग हो जाती है। वे संवेगात्मक दृष्टिकोण से बहुत चंचल और अस्थिर हो जाते हैं। शिशु की तरह किशोर क्षण में रुष्ट और क्षण में तुष्ट दिखाई देते हैं। जरा-जरा सी बात पर बिगड़ पड़ना, उत्तेजित हो जाना, निराश होकर आत्महत्या पर उतारू हो जाना, प्रथम दृष्टि में एक-दूसरे को दिल दे बैठना आदि किशोरों के संवेगात्मक व्यवहार की सामान्य विशेषताएँ हैं।

इन सब बातों को देखते हुए इस अवस्था में संवेगों को ठीक प्रकार प्रशिक्षित करने और संवेगात्मक शक्तियों को अनुकूल दिशा में प्रवाहित करने की अत्यन्त आवश्यकता है। हैडो रिपोर्ट (Hadow Report) ने इस आवश्यकता को निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त करने का प्रयत्न किया है— "युवाओं की धमनियों में 11 से 12 वर्ष की अवस्था से ही एक ज्वार उमड़ना प्रारम्भ हो जाता है, इसे किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है। यह ज्वार बाढ़ का रूप धारण कर सकता है परन्तु अगर इस प्रचण्ड जल प्रवाह को पूरी शक्ति के साथ अनुकूल दिशा में प्रवाहित किया जाए तो यह अपने निश्चित लक्ष्य पर पहुँच सकता है।" (Ross, 1951, p. 153)

प्रौढ़ावस्था में संवेगात्मक विकास (Emotional Development During Adulthood)

प्रौढ़ावस्था में संवेगात्मक विकास अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता है। इस अवस्था में प्रायः सभी व्यक्तियों में संवेगात्मक रूप से परिपक्वता आ जाती है। संवेगात्मक परिपक्वता क्या है, यह जानने का प्रयत्न नीचे किया जा रहा है।